

आन्वीक्षिकी (von आन्वीक्षि) f. *Logik* AK. 1,1,5,5. H. 231.233. M. 7, 43. न्याय आन्वीक्षिकी पञ्चाध्यायी गैतमेन प्रणीता MADHUS. in Ind. St. 1, 18.

आन्वीक्षिकं adj. = आन्वीषं वर्तते P. 4, 4, 28.

आप्, आप्रैति DHĀTUP. 27, 14. आप्रति 34, 32. potent. प्रापियम् (ved.); perf. आप, आप्रुम्; aor. आपस्, आपत्, आपन्; अवाप्सीम् (ep.); fut. आप्यति; आतुम्, आप्त्वा, आप्त P. 7, 2, 10. Kār. (aus Siddh. K.) 4. med. (ved. und ep.) perf. आप्रिरे; part. आप्रानं NAIGH. 2, 18. Nir. 3, 10 und आप्रान. 1) *erreichen, einholen*; act.: न ये दिवः पृथिव्या अर्त्तमापुः RV. 1, 33, 10. 100, 15. नहि ते तत्र न सहे न मन्यु वयश्चानामी पतयंत आपुः 24, 6. 7, 99, 2. न वै वातश्चन काममाप्नोति AV. 9, 2, 24. तद्वाप्नोदिन्द्रो वा यतीस्तस्माद्रूपो अन्नु छन 3, 13, 2. 2, 11, 1. TS. 5, 1, 3, 4. नेन्मा पाप्मा मृत्युराप्रावत् ÇAT. Br. 14, 4, 3, 34 (= BRH. ÂR. Up. 1, 3, 23). तान्याप्नोत्तान्याप्त्वा मृत्युराहन्तु BRH. ÂR. Up. 1, 3, 21. यदनञ्जरा वाप्नोति KHĀND. Up. 8, 1, 4. तमसः परमापद्व्ययं पुरुषं योगसमाधिना RAGH. 8, 24. *erreichen, betreten* (einen Ort): आराममापत् NALOD. 2, 22. *auf Jmd stossen, Jmd antreffen*: शवरीमापनुर्वने BHĀṬṬ. 6, 59. — med.: आप्रानं तीर्थं क इह प्र वैच्येनेन पया प्रपिबन्ते सुतस्य *zum Ziele führend* RV. 10, 114, 7. — pass.: मया लमाप्याः शरणम् *ich habe an dir eine Zuflucht gefunden* BHĀṬṬ. 1, 21. — 2) *erlangen, gewinnen, in Besitz nehmen, auf sich laden, erlangen*; act.: देवा मर्त्स्य सधनित्वमाप RV. 4, 1, 9. को अयं वीरः संधमादमाप 23, 2. न सोमदेव आप्रदिषम् 8, 89, 7. 10, 93, 13. AV. 4, 11, 9. 38, 3. 9, 2, 19. 3, 22. तत्तान्याप्यस्तद्वारुत्सत ÇAT. Br. 4, 6, 9, 20. 3, 9, 4, 13. 6, 2, 2, 31. 9, 5, 2, 3. 12, 2, 2, 8. सर्वान्कामानाप्या Ait. Up. 4, 6. अन्वयोगेन तैलानि तिलेभ्यो नाप्तुमर्हति Hit. Pr. 29. सति ते मन्ववः — स्वे स्वे ऽहरे सर्वमिदमुत्पाद्यापुश्चाराचम् M. 1, 63. न त्वेवाधो सोपकोरे कासीदो वृद्धिमाप्नुयात् 8, 143. पलम् 3, 95. 129. 283. 9, 161. 11, 8, 28. तृप्तिम्, सुखम् u. s. w. 4, 229. 230. इहाप्या कीर्तिमाप्नोति पतिलोकं परत्र च 3, 166. 165. 8, 81. 9, 29. 137. प्रगालयानि चाप्नोति 30. चौरस्य — किल्विषम् 8, 40. 316. येन श्रेयो ऽकृमाप्नुयाम् BHAG. 3, 2. अयाप्तवतो वेदेत्कान्तंस्कारान् MBH. 1, 4977. पुत्रम् — आप्रुहि ÇĀK. 12. KATHĀS. 13, 130. तस्य पुत्रत्वमाप्नुहि R. 1, 14, 29. तावितरेतरेतात्यं भङ्गं ज्ञयं चापत् RAGH. 7, 51. शतं क्रतूनामपविघ्नमाप सः (vgl. महाक्रतुं संप्राप्नुहि MBH. 2, 1227) 3, 38. दुःखं सुमहदप्राप्ति M. 4, 167. N. 10, 11. अयशो महत् M. 8, 128. नाङ्गुलिच्छेदमाप्नुयात् 368. शिपाश्चैवाप्नुयाद्दश 369. आप्रोति द्वेष्यतां चैव लोकात् MBH. 3, 1046. स्वसैन्यनायकार्थाय चित्तमाप भृशं तदा 14244. दिष्टात्तमाप्स्यति भवान् RAGH. 9, 79. नाप्नुयात्किंचित् *erleide nichts* M. 8, 188. — med.: येन विप्रास आप्रिरे RV. 9, 108, 4. आप्रानोत्तौ विवस्वतो (भगम्) 10, 5. आप्रानं ब्रह्मं चित्तर्षद्विचैर्दिवे *erfolgreich* 2, 34, 7. — pass.: मनसा ह्यनाप्तमाप्यते TS. 2, 3, 11, 4. — 3) pass. refl. *sein Ziel, sein Ende erreichen, voll werden*: अर्धमासशः संवत्स्रं आप्यते TS. 2, 5, 3, 3. — partic. आप्रति 1) *erreicht, ereilt, getroffen*: तस्माद्गीर्षीं पशुं व्यसाप्त इत्याचक्षते ÇAT. Br. 8, 2, 3, 14. यदिदं सर्वं मृत्युनाप्तं सर्वं मृत्युनाभियन्तम् BRH. ÂR. Up. 3, 1, 3. — 2) *erlangt, empfangen, in Besitz genommen* H. an. 2, 158. MED. t. 3. सर्वं म आप्रप्तमस्तसर्वं जितम् ÇAT. Br. 1, 6, 3, 26. अद्रिर्वा इदं सर्वमाप्तम् 1, 4, 14, 15. आप्रैकाम् 14, 7, 1, 21 (= BRH. ÂR. Up. 4, 3, 21). ÇVETĀÇV. Up. 1, 11. पुत्रिण्याप्तश्च (सुतः) देवरात् M. 9, 143. नियमैर्विचिधेरात्तम् (बलम्) R. 3, 3, 15. H. 881. DHĀTAS. 96, 5. KATHĀS. 22, 29. 28, 54. आप्रतशापः 21, 26. — 3) *erreicht habend, hinanreichend, sich erstreckend*

über (अभि): नो अनाप्ताः (अपः) सादयेत् ÇAT. Br. 1, 1, 1, 21. (आत्मानं) सर्वमिदमभ्याप्तम् 10, 6, 3, 2. — 4) *reichlich, voll*: क्रतुमिर्विचिधेरात्तद्विष्णोः M. 7, 79. N. 3, 43. 26, 38 (Bopp). Viçv. 3, 24. R. 2, 30, 35. — 5) *zu einer Sache geeignet, geschickt, zuverlässig; m. eine geeignete Person, Gewährsmann* AK. 2, 8, 1, 13. H. 734. ad. 2, 158. MED. t. 3. संवत्सरिकमातिश्च राष्ट्रदाकारयेद्वलिम् M. 7, 80. गुल्मान् 190. आप्रताः सर्वेषु वर्षेषु कार्याः कार्येषु सान्निपाः 8, 63. प्राज्ञकाः 294. मन्त्रिभिः R. 1, 7, 18. °गुरुवः BHĀṬṬ. 1, 52. हृतः RAGH. 3, 39. भिषग्भिः 3, 12. °पुरुषैः PAKĀT. 43, 8. III, 38. Suçr. 1, 240, 3. 4. 2, 90, 15. 183, 9. आप्रतद्वारेण Sch. zu ÇĀK. 97. आप्रतचन *die Aussage eines Gewährsmanns* SĀMĀKĀK. 4. 5. RAGH. 11, 42. आप्रतवाक्य COLEBR. Misc. Ess. I, 303. आप्रतागम und आप्रतश्रुति SĀMĀKĀK. 3. आप्रतागम 6. आप्रतोपदेश KAPILA in Z. d. d. m. G. 7, 303, N. 4. SĀH. D. 10, 9. आप्रतोक्ति H. 242. Die Eigenschaften eines Gewährsmanns findet man in einem Citat von GAUṢAPĀDA zu SĀMĀKĀK. 4 aufgezählt. — 6) *nahe stehend, verwandt, befreundet, vertraut; m. Verwandter, Freund, Vertrauter* (vgl. आप्रि) MED. t. 3 (Fv). M. 2, 109. 8, 64. JĀGĀ. 1, 28. 2, 71. RAGH. 12, 52. मातुरातोश्च वान्धवान् M. 3, 101. आप्रतवन्धुभिः DEV. 1, 19. — Vgl. अनाप्त. — caus. आप्रपति; gerund. mit praep. आप्रप्य oder आप्र्य P. 6, 4, 57. Vop. 26, 215. 1) *erreichen lassen*: अत्रैव मा भगवान्मोक्षात्तमापीपिपत् (ungramm. aor. für आप्रपित्; in der Mādhj.-Rec.: आप्रिपदत् von पद्) BRH. ÂR. Up. 4, 3, 14. — 2) *Jmd Etwas erlangen lassen*: आप्रपतो वै तावन्व्योऽन्यस्य कामम् KHĀND. Up. 1, 1, 6. — 3) *Jmd Etwas abgeben, zu fühlen geben*: आप्रपितुं भूममाह योगधराणाः KATHĀS. 17, 32. — 4) = आप्रु DHĀTUP. 34, 32. — desid. ईप्सति P. 7, 4, 55. Vop. 19, 10. *zu erreichen, zu erlangen streben*: सुकृता लोकमीप्सन् AV. 9, 3, 12. ÇAT. Br. 10, 1, 2, 1. 12, 1, 1, 1. 13, 1, 2, 9. विशिष्टं बलमीप्सत्या MBH. 1, 1090. तस्य पार्विव्रतामीप्से 2, 1007. तद्वधमीप्समानाः 3, 13191. ved. अप्सत्त RV. 1, 100, 5. तमप्सत्त शर्वस उतस्येवु नरो नर्मवसे. — partic. ईप्सित 1) *wen oder was man zu haben wünscht, begehrt, erwünscht, genehm, lieb*: प्रतिगच्छेप्सितं द्राष्टम् M. 2, 48. कस्यासौ यस्याहं हृत ईप्सितः N. 3, 2. ईप्सितामीप्सितो नाथ किं मां न प्रतिभापसे 12, 15. R. 1, 4, 18. 4, 28, 3. P. 1, 4, 27. MEGH. 112. VID. 93. श्रिया दुरायः कथमीप्सितो भवेत् ÇĀK. 62. ईप्सितो नरनारीणाम् N. 1, 4. R. 4, 27, 22. विद्ये कामधुक्कामान्यस्य यस्मिप्सितान्यथा Viçv. 3, 1. लभेत कामान्मनसा यथेप्सितान् MBH. 3, 161. यथेप्सितम् adv. *nach Wunsch* AK. 2, 9, 57. H. 1303. BHĀṬṬ. 2, 28. n. Wunsch, Verlangen: तव प्रसादाद्भवतु — ममेप्सितम् Viçv. 3, 18. RAGH. 1, 79. 3, 1, 5. सिध्यत्येतत्तवोप्सितम् KATHĀS. 22, 170. प्राप्स्यसि चेप्सितम् VID. 247. — 2) *von einer Autorität festgesetzt, anerkannt*: अस्याः पैशाच्याः प्रकृतिः शौरसेनीप्सिता Sch. zu VARARUĀI 10, 2 in LASSEN, Institut. 7. — desid. vom caus. *zu erreichen streben*: रात्रीरापियिपति स यदि रात्रीरापियिषिषेत् ÇAT. Br. 2, 6, 3, 11. — अभि *bis zu Etwas reichen, erreichen* ÇAT. Br. 7, 4, 1, 43. यत्रान्याप्राति तदभिमूष्य 9, 1, 2, 16. 13, 6, 2, 20. Vgl. अभिपतम्. — caus. *bis an's Ziel bringen*: आप्रति वा रेचयति न वान्यापयति ÇAT. Br. 9, 5, 3, 3. 1, 1, 1, 15. 21. 10, 1, 3, 8. 10. 4, 3, 6. — desid. *zu erlangen streben, nach Etwas verlangen, wünschen*; act.: तं कृत्स्नं सद्वाजुणमभीप्सति MBH. 2, 534. त्वो पुत्रं चाप्यभीप्सामः 3, 14458. यदि — यज्ञं प्राप्तुमभीप्सामि 2, 632. प्रुद्धिमभीप्सता M. 3, 136. 12, 105. ब्रह्मलोकमभीप्सतः JĀGĀ. 1, 111. योगमभीप्सता 3, 110. सेनार्पितमभीप्सतः R. 1, 38, 1. अभिप्सता MBH. 1, 6469. R.